शाम में चार बजे जब मेरे कार्यक्रम का समय हो जाता मैं बाथरूम चला जाता, अपनी जेब से मोबाइल निकालता और उसे रिकॉर्डिंग मोड पर करके पुनः जेब में रख लेता। मैं कक्षा में बच्चो को पढ़ाता और मेरी जेब में मेरा प्रिय कार्यक्रम रिकॉर्ड होता रहता। उस स्कूल में अध्यापकों को कुछ समझा ही नहीं जाता था, मैं इस स्कूल में मुश्किल से 19 दिन रहा, उसके बाद मैंने उस स्कूल को छोड़ दिया।

दोस्तो, मैंने 10 अक्टूबर, 2017 को अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन में नौकरी ग्रहण की है। मैं इस समय मध्यप्रदेश के खरगोन नामक शहर में नौकरी कर रहा हूँ। खरगोन जिला मुख्यालय है। मैंने यहाँ आकर सबसे पहले रेडियो के बारे में पता किया-मैंने अपने ऑफ़िस के एक दो सदस्यों को बताया कि मुझे विविध भारती सुनने का शौक है;मैंने उनसे पूछा कि क्या वे विविध भारती सुनते हैं ? मैंने अपने मोबाइल में कई बार विविध भारती बजाने का प्रयास किया, किंतु निराश हुआ जब मुझे पता चला कि यहाँ खरगोन में एफ एम बैंड की सुविधा नहीं है। एफ़एम बैंड की सुविधा न होने का मतलब यह था कि मैं अपने मोबाइल पर विविध भारती नहीं सुन पाऊँगा।

लेकिन एक दिन यहाँ पर यादगार घटना घटी। खरगोन में मेरा ऑफ़िस चमेली की बाड़ी नामक जगह पर है, मैंने चमेली की बाड़ी में ही किराये से एक फ्लैट ले लिया। मेरे घर से ऑफिस की दूरी लगभग तीन सौ मीटर होगी। मेरा ऑफिस साढ़े नौ बजे से शाम के छह बजे तक लगता है। सुबह साढ़े नौ बजे विविध भारती पर आज के फ़नकार का समय होता है, यही कार्यक्रम रात के साढ़े नौ बजे प्रसारित होती है। विविध भारती में विभिन्न कार्यक्रमों की शुरुआत में अलग अलग सुमधुर ध्वनियाँ सुनाई पड़ती हैं। विविध भारती की स्वर लहरियाँ मेरी इतनी अपनी हैं कि उन्हें सुनकर मुझे पता चल जाता है कि अब कौन सा कार्यक्रम प्रसारित होने वाला है। एक बार की बात है, मैं अपने घर से ऑफ़िस जा रहा था, यह नौकरी ज्वाइन करने के कुछ दिनों बाद की बात है। अचानक मेरे कानों में कुछ स्वर लहरियाँ बरसीं ; मैं चौंका..... ये विविध भारती की सुमधुर स्वर लहरियाँ थीं। मैं ठिठककर रुक गया। मैंने उधर ध्यान दिया जिधर से सुमधुर स्वर लहरियाँ आ रही थीं। मैंने देखा-एक घर के आंगन में कुर्सी पर कोई बूढ़ा आदमी बैठा हुआ था, उसके बगल में रेडियो रखी थी और उसी से सुमधुर स्वर लहरियाँ निकलकर मेरे कानों में घुल रही थीं। मैं वर्षों बाद किसी व्यक्ति को रेडियो सुनते देख रहा था, टीवी आने के बाद इस तरह के दृश्य गायब हो गए थे। मैं गहरे आनंद से भर गया।

दोस्तो, मैं मई 2018 के दूसरे सप्ताह में जब यह संस्मरण लिखने बैठा हूँ, तो वह दृश्य आज भी मेरी आँखों के सामने चलचित्र के दृश्यों की भाँति गतिशील हो गया है,ऐसा लगता है मानो कल की ही बात हो। इस घटना का मतलब एक ही था कि मैं अपने मोबाइल में न सही, परंतु परंपरागत मीटर की सुइयों वाले रेडियो में विविध भारती सुन सकता था। मैं एक दिन बाज़ार गया और मुझे यह जानकर बहुत ख़ुशी हुई कि यहाँ खरगोन की दुकानों में अभी भी मीटर की सुइयों वाला रेडियो बिक रहे थे। मेरे पास विकल्प था कि मैं एक रेडियो खरीद लूँ और उस पर विविध भारती सुनूँ ; किंतु तभी मुझे एक दूसरा विकल्प भी नज़र आया। मुझे याद आया कि मैंने वाराणसी में विविध भारती पर यह सुना था कि मोबाइल के प्लेस्टोर से विविध भारती का ऐप डाउनलोड करके विविध भारती सुनी जा सकती है। तब मैंने अपने मोबाइल पर विविध भारती का ऐप डाउनलोड किया और विविध भारती सुनने लगा। लेकिन ऐप से विविध भारती सुनने में कुछ दिक्कतें थीं, इसमें अक्सर विज्ञापन आते। विविध भारती सुनते समय अगर ग़लती से भी उंगुलियाँ इन विज्ञापनों पर चली जातीं तो तुरंत कोई सेवा मेरी मोबाइल पर एक्टिव हो जाती और मेरे मोबाइल से पैसे कट जाते। मैं कस्टमर केयर से बातें करके इसकी शिकायत करता, इस पर वे कहते कि मैंने ही कोई सेवा सब्सक्राइब की है, जिसके कारण मेरे पैसे कट गए; मैं उनसे जिरह करता कि मैंने सब्सक्राइब नहीं किए, वे अपना तर्क देते। कस्टमर केयर ने एक दो बार मेरे कटे पैसे लौटाए तो एक दो बार नहीं भी लौटाए। ऐसा बार बार होता और मैं परेशान होता रहता। मैं सोचता कि क्या करूँ, मैं विविध भारती सुनना चाहता था और यह भी चाहता था कि इस दौरान मेरे पैसे न कटें। मैं परेशान होता रहा, लेकिन तभी मुझे विविध भारती सुनने का एक तीसरा तरीका मिला और मेरी समस्याएँ हल हो गईं।

मैं अभी खरगोन में श्री जयप्रकाश जायसवाल और श्रीमती लता जायसवाल के मकान में किराये पर रहता हूँ। मैं एक बार उनके यहाँ गया तो देखा कि उनके यहाँ एक डिजिटल रेडियो है, जो डीटीएच के माध्यम से जुड़ा हुआ है। आंटी ने मुझे बताया कि अंकल को रेडियो पर गीत सुनने का शौक है। मैं बहुत खुश हुआ, इसलिए कि अब मुझे विविध भारती सुनने का उत्तम उपाय मिल गया था। मीटर की सुइयों वाली रेडियो में सदा से एक दोष रहा है कि उसमें मीटर की सुइयों को इधर उधर खिसकाना पड़ता है, और इस पर भी उसमें कई बार खर्र खर्र की आवाज़ें सुनाई पड़ती रहती हैं। मोबाइल के ऐप से विविध भारती सुनने के ख़तरे मैं देख चुका था, इसमें कई बार मेरे पैसे कट जाते थे। मैंने अब विविध भारती सुनने के लिए तीसरा उपाय करने का निश्चय किया। अब मेरे यहाँ डीटीएच से रेडियो सुनने की व्यवस्था हो गई; मैं उस दिन बहुत बहुत खुश हुआ और उस दिन के बाद से आज भी अपना समय विविध भारती के साथ बिताता हूँ।

कभी कभी मेरी पत्नी और बेटी मेरे साथ रेडियो पर विविध भारती का आनंद उठाते हैं। राजीव रंजन प्रसाद का अब भी कई बार रात में 9:00-10:00 बजे के बीच फ़ोन आता है, और तब मैं बाद में उसे कॉलबैक करके बताता हूँ कि उस समय रेडियो सुन रहा था; तब राजीव वही चिरपरिचित वाक्य कहता है -''ओह ! मैं भूल गया था।'' या फिर मैं जब उसका फोन नहीं उठाता तो वह समझ जाता है कि मैं विविध भारती सुन रहा हूँ। इसलिए मैं जब उसे कॉलबैक करता हूँ तो वह कहता है- 'रेडियो सुन रहे थे?'' ■